तर्ज-सुहाना सफर और ये मौसम हंसी

रिझाती पिया को जैसे सखियां सभी,
ये पुतलीयां जवेरन रिझायें सखी

1- शाक सब्जी वनों से लाते बंदर,
खूबखुशाली भी सेवा में हाजिर
करें सेवा,हुकम मानें,है रूहों की ये साहेबी
2- मन के स्वरूप सखियों के हैं ये,
एक पल में पच्चीस पक्ष घूमें हैं ये
कई वस्तां,ले के खड़ियां,असल आनंद है यहीं
3- धाम में सब कोई प्रेम करता,
पिया का दिल ही तो लीला है करता
पसु पंखी,खूब खुसाली,के या हों पुतलियां सभी
4- ज़र्रा ज़र्रा माफिक है रूहों के,
अर्शे वाहेदत में रहते सभी ये
बनके आशिक,वे रिझायें,प्रीतम को सभी
5- जिसे न समझा था धाम में रहकर,
बताया खेल में इलम से मेहर कर
बड़ा है इश्क,बड़ी साहेबी,के तुम ही तुम हो धनी

Nijanand App